लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -229
सोमवार, 14 जून, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, सीतापुर, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

06 कांग्रेस से नेताओं का पलायन जारी

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव : डॉ. उपाध्याय

ऑक्सीटॉसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है

भास्कर न्यूज़

कानपुर। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते है जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटॉसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटॉसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटॉसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ. उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाएं, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें। जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य भी सही रहेगा।

R.N.I. NO UPHIN® 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा उई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8
अंक - 208
कानपुर
सोमवार, 1 4
जून 2021
पृष्ठ - 4
मूल्य 1:00

2 गज की दूरी, मास्क है जरूरी

सोशल रिपोर्टर

हिन्दी दैनिक

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव -डॉक्टर पीके उपाध्याय

अनिल राठौर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव" विषय पर विस्तार से दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा अपन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूचम मात्रा दूध में आ जाती है बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने "ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू जानकारी साझा की है।डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु अंगों में दुष्प्रभाव प?ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं।जिससे उनके बेशकीमती पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़

आज
कानपुर
14 जून, 2021
11

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन से दुधारू पशुओं संग मानव के स्वास्थ्य पर खतरा

कानपुर, 13 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह की ओर वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रो एवं विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है। वैज्ञानिक ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भरूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बज्जेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बज्जों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। दुधारू पशुओं से स्वत दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाएं। बिना इंजेक्शन से लिये दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

डॉ पीके उपाध्याय

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 14 जून • 2021
5

दुधारू पशुओं पर ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का प्रयोग खतरनाक

■ कानपुर (एसएनबी)।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि के पशुपालन विभागाध्यक्ष प्रो.पीके उपाध्याय ने अधिकतर पशुपालकों द्वारा दुधारू पशुओं को ऑक्टीटोसिन इंजेक्शन लगाकर दूध निकालने की प्रक्रिया पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा है कि दुधारू पशुओं पर इस इंजेक्शन का प्रयोग खतरनाक है और इसके दुष्प्रभाव से मानव जीवन के साथ ही दुधारू पशु दोनों को खतरा हो सकता है।

डॉ .उपाध्याय ने बताया कि ऑक्टीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिटयूटरी ग्रंथि से स्त्रावित होता है। ऑक्टीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है। उन्होंने कहा कि पशुपालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल थन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है।

उन्होंने कहा कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्टीटोसिन देने से शरीर में ऑक्टीटोसिन की मात्रा अधिक हो जाती है, जिससे दुधारू पशुओं पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इससे पशु धीरे-धीरे जल्दी ही बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार-बार गर्मी में आना, लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

सीएसए के पशुपालन विभागाध्यक्ष प्रो.पीके उपाध्याय ने कहा मानव स्वास्थ्य के साथ ही दुधारू पशुओं पर भी पड़ता है इंजेक्शन का दुष्प्रभाव

डॉ. पीके उपाध्याय।

उन्होंने बताया कि पशुपालनों की लापरवाही के कारण पशु जल्दी ही अनुपयोगी हो जाते हैं। इससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्टीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा भी दूध में आ जाती है, जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे पुरुष एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र के पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टिदोष आदि की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। डॉ.उपाध्याय के अनुसार देश में ऑक्टीटोसिन इंजेक्शन के प्रयोग को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है।

यह पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। उन्होंने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहर खिलाएं। प्रसन्नचित्त, प्यार-दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर पशुओं से ऑक्टीटोसिन मुक्त दूध प्राप्त करें।

ऑक्टीटोसिन मुक्त दूध का सेवन करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ्य एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं तथा शरीर को पौष्टिक अहार भी मिलेगा। वहीं पशुधन का स्वास्थ्य भी सही रहेगा।

अश्क्सीटश्सिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावः-डॉ पी के उपाध्याय

15/06/2021

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है।डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे–धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं।जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूचम मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतरू दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें।जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 258 कानपुर नगर

13 जून 2021, रविवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

हैप्पी बर्थडे; 19 की उम्र में दिशा ने दिया था पहला ऑडिशन

पेज 10

सीएमसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान भिाग के प्रोफेसर ने दी जानकारी

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का प्रयोग होता है खतरनाकः डॉ. उपाध्याय

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. पीके उपाध्याय ने 'ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं और मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव' विषय पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक, दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं और मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन, हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है।

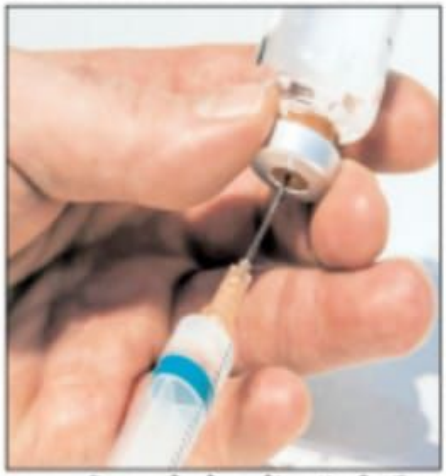

उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है। पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन, अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है, जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है और गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार-बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी

का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन के जरिए लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूचम मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ. उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें। इससे दूध उपभोग करने वालों को स्वस्थ और जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। साथ ही पशुधन का स्वास्थ्य भी सही रहेगा।

13.pdf - Read-only

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव:डॉ. उपाध्याय

कानपुर (विधान केसरी)। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं।जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ. उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें।जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

अमर उजाला
सोमवार • 14.06.2021
05
kanpur.amarujala.com

ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन पशुओं को कर रहा बीमार

कानपुर। ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन लगाकर दूध निकालने से पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाते हैं। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। ये बातें रविवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर पीके उपाध्याय ने कहीं। ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं और मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि लगातार इस दूध के सेवन से महिलाओं में गर्भपात का खतरा भी बढ़ जाता है। बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना भी बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि पशुपालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। इसको लगाने से पशु में भ्रूण गिरना, गर्भधारण न करना आदि तमाम बीमारियां हो जाती हैं। (संवाद)

14 june_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, सोमवार, 14 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 240, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

लखनऊ तथा देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | www.janexpresslive.com/epaper

'ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन दुधारू पशुओं व मानव स्वास्थ्य पर डालता है दुष्प्रभाव'

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ पीके उपाध्याय ने ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर जानकारी देते हुए कहा कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते है जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। ऑक्सीटॉसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी

ग्रंथि से स्रावित होता है जिसका प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है। उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है जबकि इसके उपयोग से अयन से दूध जल्दी आ जाता है।

उन्होंने बताया कि ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है जिससे दुधारू पशुओं में धीरे-धीरे बांझ होने,गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। वहीं इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से ऑक्सीटॉसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव? पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है।

भारत में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित

डॉ. उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। उन्होंने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाएं, प्रत्येक दिन प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें। जिससे दूध उपयोग करने वाले व्यक्ति भी स्वस्थ रहें और जानलेवा बीमारियों से दूर रहें।

आर. एस. एस. के सेवा भारती, गोरक्षप्रांत को डॉ हरेश प्रताप सिंह ने 5 लाख का दिया दान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। डॉ हरेश प्रताप सिंह, सदस्य, लोक सेवा आयोग, को अभी हाल ही में कृषि क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए महामहिम राष्ट्रपति द्वारा विश्व स्तरीय ''सरदार बल्लभ भाई पटेल'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है और पुरस्कार में 5 लाख रु की धनराशि प्रदान की गई। इस पुरस्कार का चयन मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संरक्षित ''हिंदी सेवा संस्थान'' द्वारा किया जाता है। डॉ सिंह ने पुरस्कार में प्राप्त 5 लाख रु की पूरी धनराशि चेक द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा भारती, गोरक्षप्रांत को जन कल्याण हेतु पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सेवा प्रमुख एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय नवल किशोर जी को दिया। इस अवसर पर सेवा भारती, गोरक्षप्रांत के महामंत्री नरेंद्र शुक्ल, प्रांतसचिव डॉ आलोक श्रीवास्तव, प्रांत संपर्क प्रमुख अभिजीत जी, महानगर अध्यक्ष जितेंद्र गौड़ एवं उपाध्यक्ष आनंद जालान जी तथा संघ के अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

पुरस्कार में मिले पांच लाख रुपये दान किए

गोरखपुर। 'सरदार बल्लभ भाई पटेल' पुरस्कार से लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. हरेश प्रताप सिंह को कुछ दिनों पूर्व सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें कृषि क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए राष्ट्रपति द्वारा दिया गया। डॉ. हरेश ने पुरस्कार में प्राप्त पांच लाख रुपये की धनराशि का चेक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा भारती, गोरक्षप्रांत को जन कल्याण के लिए दान कर दिया है। रविवार को उन्होंने चेक पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सेवा प्रमुख एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक नवल किशोर को सौंपा। इस अवसर पर सेवा भारती, गोरक्षप्रांत के महामंत्री नरेंद्र शुक्ल, प्रांत सचिव डॉ. आलोक श्रीवास्तव, प्रांत संपर्क प्रमुख अभिजीत, महानगर अध्यक्ष जितेंद्र गौड़, उपाध्यक्ष आनंद जालान आदि मौजूद रहे। संवाद